विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

पाठ्यक्रम

एम.ए. प्रथम सेमेस्टर 2022-23

नवीन शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

ज्योतिर्विज्ञान

(संशोधित तथा परिवर्धित)

CBCS PATTERN

SCHOOL OF STUDIES IN SANSKRIT, JYOTIRVIGYAN & VED
VIKRAM UNIVERSITY, UJJAIN

SEMESTER-I (M.A. JYOTIRVIGYAN)
CBCS PATTERN

SUBJECT CODE	COURSE CODE	TITLE OF THE COURSE	COURSE CREDITS	NO. OF HRS PER WEEK	WEIGHTAGE FOR SEMESTER END EXAMINATION	WEIGHTAGE FOR INTERNAL EXAMINATION	TOTAL MARKS
	JCC-01	ज्योतिषशास्त्र का इतिहास तथा सिद्धान्त ज्योतिर्गणित	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-02	फलित ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-03	संस्कृत	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-01	(1) चिकित्सा ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-01	(2) संहिता ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-01	(3) वास्तुविद्या	05	5 Hrs.	60	40	100
	EDC-01	Entrepreneurship Development	04	4 Hrs.	48	32	80
	P-01	कम्प्यूटर तथा ज्योतिष (Practical)	02	2 Hrs.			40
	JVV-01	Comprehensive Viva-Voce (Virtual)	04				80
		TOTAL	30				600

Note :

CORE COURSE (JCC).
ABILLITY ENHANCEMENT & SKILL DEVELOPMENT (AE & SD)

CORE ELECITVE COURSE (JEC)
COMPREHENSIVE VIVA - VICE (JVV)

नोट : 1. विषय समूह JCC-01, JCC-02, JCC-03 लेना अनिवार्य है।
2. विषय समूह JEC - 01 (i), JEC - 01 (ii), JEC - 01 (iii) में से छात्र किसी एक विषय का चयन कर सकता है

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-01**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – ज्योतिषशास्त्र का इतिहास तथा सिद्धान्त ज्योतिर्गणित

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को काल के विषय में विभिन्न ईकाईयों; त्रुटि से लेकर प्रलय पर्यन्त, सतयुग, त्रेता, द्वापर एवं कलियुग के समय का ज्ञान कराना है। भगण की जानकारी, ब्रह्माण्ड में गतिशील ग्रहों के स्पष्ट मध्यम स्थिति का आनयन तथा ग्रहों की कक्षा का ज्ञान कराना है। इसके अध्यापन का उद्देश्य अधिमास निर्णय करना एवं भूपरिधि का ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी काल की विभिन्न इकाईयों एवं ग्रहों के भगण का ज्ञान, स्पष्ट एवं मध्यम ग्रह का आनययन तथा ग्रह कक्षा का ज्ञान, अधिमास एवं क्षयमास का ज्ञान तथा भूपरिधि का ज्ञान, ज्या, क्रान्ति, भुज–कोटि, मन्दफल एवं शीघ्रफल का साधन, पलभा एवं लंकोदय, स्वोदयमान, भुजान्तर एवं उदयान्तर साधन तथा स्वरोजगार हेतु पंचांग निर्माण के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 आर्ष ज्योतिष परिचय, भारतीय ज्योतिष का स्वरुप, विकास एवं काल वर्गीकरण ज्योतिषशास्त्र प्रवर्त्तकों का परिचय एवं कृतियाँ।

इकाई–2 पंचांग परिचय, भचक, ग्रह, राशियाँ, नक्षत्र स्वरूप तथा संज्ञाएँ, ज्योतिर्वैज्ञानिक परिभाषाएँ।

इकाई–3 इष्टकाल साधन, अयनांश साधन, पलभा साधन
Table of Ascendants : N.C.Lahiri
(नक्षत्र काल (Sidereal time) साधन)

इकाई–4 चरसाधन एवं सूर्योदय–सूर्यास्त साधन – आर्ष पद्धति
Table of Ascendants : N.C.Lahiri
(चरसाधन एवं सूर्योदय–सूर्यास्त साधन–अर्वाचीन पद्धति)

इकाई–5 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय
(कालमानाध्याय, भगणाध्याय, ग्रहानयनाध्याय, कक्षाध्याय, अधिकमासादिनिर्णयाध्याय तथा भूपरिध्यध्याय)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन – 40 = अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी
2. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार–मुरलीधर ठाकुर, चौखम्बा संस्कृत सिरीज, वाराणसी
3. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल
4. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार पं. सत्यदेव शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
5. सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित खण्ड) प्रथम बी.एल. ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) हिन्दी टीकाकार केदार दत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
7. ज्योतिषशास्त्र – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, त्रिस्कन्ध ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी
8. गोल परिभाषा – डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
9. Table of Ascendants : M.K. Lahiri, Astro Research Bureau, Calcutta.
10. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् – श्री गणेदशदत्त पाठक, सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी
11. Lahiri's India Ephemeris of Planets Position According to 'Nirayan' of sidereal system for current year - N.C. Lahiri, Astro Research Bureau, Calcutta.
12. मैन्युअल ऑफ एस्ट्रोलॉजी– सम्बद्ध अंश–बी.बी. रमन, रमन पब्लिकेशंस, बैंगलोर
13. भारतीय कुण्डली विज्ञान– मीठालाल ओझा, वाराणसी
14. गोलपरिभाषा – पण्डित सीताराम झा, पण्डित सीताराम पुस्तकालय, चौगभा, बहेरा, दरभंगा

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-02
प्रश्नपत्र का शीर्षक – फलित ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को फलित ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी फलित ज्योतिष के महत्वपूर्ण विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **जातकपारिजात – वैद्यनाथ**
अध्याय 1 – राशिशीलाध्याय
अध्याय 2 – ग्रहनामस्वरूपगुणभेदाध्याय

इकाई–2 **जातक पारिजात अध्याय 4 अरिष्टाध्याय**

इकाई–3 **जातकपारिजात – वैद्यनाथ**
अध्याय 6 – जातकभङ्गाध्याय
अध्याय 7 – राजयोगाध्याय

इकाई–4 **जातक पारिजात अध्याय 18 दशाफलाध्याय**

इकाई–5 **योगचिन्तामणि – वामन सम्पूर्ण ग्रन्थ**

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. जातकपारिजात–वैद्यनाथ, टीकाकार–पण्डित कपिलेश्वर शास्त्री, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी ।
2. जातकपारिजात (प्रथम एवं द्वितीय भाग) वैद्यनाथ, टीकाकार–गोपेशकुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
3. सारावली – कल्याण वर्मा, डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली
4. योगचिन्तामणि एवं व्यवहारज्योतिष – डॉ. राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर एवं डॉ. शुभम् शर्मा, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-03
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संस्कृत

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत व्याकरण तथा साहित्य के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **हितोपदेश – नारायण पण्डित**
(केवल मित्रलाभ)
(प्रारम्भ से मित्रलाभ–प्रस्ताव पर्यन्त)

इकाई–2 **हितोपदेश – नारायण पण्डित**
(केवल मित्रलाभ)
(काककूर्ममृगाखुकथा से समाप्ति पर्यन्त)

इकाई–3 **प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी – कपिलदेव द्विवेदी**
(अध्याय 1 से 10 तक)

इकाई–4 **शब्दरूप – शब्दधातुचन्द्रिका**
शब्दरूप – राम, हरि, भूभृत्, भानु, आत्मन्, रमा, रूचि, नदी, धेनु, ज्ञान,पयस्, मधु, अस्मद्, युष्मद्, तत् तथा चन्द्रमस्।

इकाई–5 **धातुरूप – शब्दधातुचन्द्रिका**
धातुरूप– भू, गम्, पा, रक्ष्, अद्, दा, प्रच्छ्, कृ, प्रच्छ्, कृ, ज्ञा, चुर् तथा ब्रू
(लट्, लृट्, लोट् तथा लिङ्)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. हितोपदेश–नारायण पण्डित, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी ।
2. प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी।
3. शब्दधातुचन्द्रिका–सम्पादक– डॉ. राजेश्वर शास्त्री मुसलगाँवकर, चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-01 (i)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – चिकित्सा ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को चिकित्सा ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी चिकित्सा ज्योतिष के अनुसार रोगविषयक ग्रहयोगों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 रोग चिकित्सा विषयक ज्योतिषीय अवधारणा
ग्रह, नक्षत्र, भाव एवं राशि

इकाई–2 वीरसिंहावलोक राजा वीरसिंह तोमर
ज्वराधिकार, अर्शरोगाधिकार, कृमिरोगाधिकार, अपस्माररोगाधिकार, उदररोगाधिकार, मुखरोगाधिकार, वातरोगाधिकार एवं निदान।

इकाई–3 अम्लपित्तरोगाधिकार, कर्णरोगाधिकार, नासारोगाधिकार, हृदयरोगाधिकार, व्रणरोगाधिकार, नेत्ररोगाधिकार, शिरोरोगाधिकार एवं निदान।

इकाई–4 बालरोगाधिकार, अश्मरीरोगाधिकार, प्रमेहरोग, कुष्ठरोग, पाण्डुरोग, शूलरोग, कास (खांसी) रोगाधिकार एवं निदान।

इकाई–5 प्रायोगिक
(जातक की कुण्डली में रोगनिर्देश)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ–

1. वीरसिंहावलोक – चौखम्भा कृष्णदास अकादमी, वाराणसी।
2. प्रश्नमार्ग – चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी।
3. सारावली – मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी।
4. जातकपारिजात – चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।
5. योगचिन्तामणि चौखम्भा – संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-01 (ii)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संहिता ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संहिताज्योतिष के अध्यापन द्वारा ज्योतिर्विद के आचार–व्यवहार एवं लक्षण से परिचय करना, सूर्य की गति के प्रभाव का अध्ययन कराना तथा पृथ्वी के विभिन्न भागों पर ग्रहों के प्रभाव का अध्ययन के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संहिता ज्योतिष पाठ्यक्रम के अध्ययन से ज्योतिर्विद आचार संहिता का ज्ञान, आदित्यचार आदि अध्यायों का ज्ञान पृथ्वी तथा देश में होने वाली घटनाओं–दुर्घटनाओं का अवलोकन कर राष्ट्र हित में पूर्व आकलन कर सकते हैं।

इकाई–1 बृहत्संहिता : आचार्य वराहमिहिर
अध्याय 1 – उपनयनाध्याय
अध्याय 2 – सांवत्सरसूत्राध्याय
अध्याय 3 – आदित्यचाराध्याय
अध्याय 4 – चन्द्रचाराध्याय
अध्याय 5 – राहुचाराध्याय
अध्याय 6 – भौमचाराध्याय
अध्याय 7 – बुधचाराध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 बृहत्संहिता : आचार्य वराहमिहिर
अध्याय 8 – बृहस्पतिचाराध्याय
अध्याय 9 – शुक्रचाराध्याय
अध्याय 10 – शनैश्चरचाराध्याय
अध्याय 11 – केतुचाराध्याय
अध्याय 12 – अगस्त्यचाराध्याय
अध्याय 13 – सप्तर्षिचाराध्याय
अध्याय 14 – कूर्मविभागाध्याय
अध्याय 15 – नक्षत्रव्यूहाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 बृहत्संहिता : आचार्य वराहमिहिर
अध्याय 16 – ग्रहभक्तियोगाध्याय
अध्याय 17 – ग्रहयुद्धाध्याय
अध्याय 18 – शशिग्रहसमागमाध्याय
अध्याय 19 – ग्रहवर्षफलाध्याय
अध्याय 20 – ग्रहश्रृङ्गाटकाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 बृहत्संहिता : आचार्य वराहमिहिर
अध्याय 21 – गर्भलक्षणाध्याय
अध्याय 22 – गर्भधारणाध्याय
अध्याय 23 – प्रवर्षणाध्याय
अध्याय 24 – रोहिणीयोगाध्याय
अध्याय 25 – स्वातीयोगाध्याय
अध्याय 26 – आषाढीयोगाध्याय
अध्याय 27 – वातचक्राध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 बृहत्संहिता : आचार्य वराहमिहिर
अध्याय 28 – सद्योवर्षणाध्याय
अध्याय 29 – कुसुमलताध्याय
अध्याय 30 – सन्ध्यालक्षणाध्याय
अध्याय 31 – दिग्दाहलक्षणाध्याय
अध्याय 32 – भूकम्पलक्षणाध्याय
अध्याय 33 – उल्कालक्षणाध्याय
अध्याय 103 – विवाहपटलाध्याय
अध्याय 104 – ग्रहगोचराध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. बृहत्संहिता–आचार्य वराहमिहिर–टीकाकार– श्री अच्युतानन्द झा, चौखंबा विद्याभवन, वाराणसी ।
2. बृहत्संहिता–आचार्य वराहमिहिर– व्याख्याकार– डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली
3. बृहत्संहिता भाग–2, टीकाराम– सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-01 (iii)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – वास्तुविद्या

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को वास्तुविद्या के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी वास्तुविद्या के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या श्लोक 1–50**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या श्लोक 51–100**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या श्लोक 101–150**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या श्लोक 151–200**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या श्लोक 201–231**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. वशिष्ठोक्त वास्तुविद्या, सम्पादक डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, त्रिस्कन्ध ज्योतिषम्, वाराणसी (उ.प्र.)
2. वास्तुतन्त्र–भरत तिवारी, कामेश्वर प्रकाशन, बीकानेर

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (प्रथम सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **P-01**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – कम्प्यूटर तथा ज्योतिष

कुल अंक 40 (क्रेडिट 02)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को कम्प्यूटर तथा ज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है। ज्योतिष में भी कम्प्यूटर केसॉफ्टवेयर अपनी आधुनिक भूमिका निभा रहा है। कम्प्यूटर तथा ज्योतिष पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को तकनीकी रूप से सुयोग बनाना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को कम्प्यूटर का सामान्य परिचय तथा सॉफ्टवेयर का ज्ञान, सॉफ्टवेयर से कुण्डली गुण मिलान का ज्ञान तथा सॉफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **कम्प्यूटर का सामान्य परिचय**

इकाई–2 **ज्योतिष के विभिन्न सॉफ्टवेयरों का वर्णन**

इकाई–3 **सॉफ्टवेयर की शुद्धता परीक्षण का ज्ञान**

इकाई–4 **सॉफ्टवेयर से कुण्डली निर्माण विधि**

इकाई–5 **सॉफ्टवेयर से गुण मेलापक**

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. कम्प्यूटर सामान्य ज्ञान जेबीसी प्रेस संपादक मण्डल
2. Astro office 2018
3. Parashar Light 7.01
4. Future point
5. Astrosage mobile software
6. Hindu Calendar offline software

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

पाठ्यक्रम

एम.ए. द्वितीय सेमेस्टर 2022-23

नवीन शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

ज्योतिर्विज्ञान

(संशोधित तथा परिवर्धित)

CBCS PATTERN

SCHOOL OF STUDIES IN SANSKRIT, JYOTIRVIGYAN & VED
VIKRAM UNIVERSITY, UJJAIN

SEMESTER-II (M.A. JYOTIRVIGYAN)
CBCS PATTERN

SUBJECT CODE	COURSE CODE	TITLE OF THE COURSE	COURSE CREDITS	NO. OF HRS PER WEEK	WEIGHTAGE FOR SEMESTER END EXAMINATION	WEIGHTAGE FOR INTERNAL EXAMINATION	TOTAL MARKS
	JCC-04	सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-05	होरा ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-06	वास्तु ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-02	(1) संस्कृत	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-02	(2) वेदाङ्ग ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-02	(3) प्रश्न ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	EDC-02	Communication Skills	04	4 Hrs.	48	32	80
	P-02	पञ्चांङ्ग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पद्धति (Practical)	02	2 Hrs.			40
	JVV-02	Comprehensive Viva-Voce (Virtual)	04				80
		TOTAL	30				600

Note :

CORE COURSE (JCC).
ABILLITY ENHANCEMENT & SKILL DEVELOPMENT (AE & SD)
CORE ELECITVE COURSE (JEC)
COMPREHENSIVE VIVA - VICE (JVV)

नोट : 1. विषय समूह JCC-02, JCC-03, JCC-04 लेना अनिवार्य है।
2. विषय समूह JEC - 02 (i), JEC - 02 (ii), JEC - 02 (iii) में से छात्र किसी एक विषय का चयन कर सकता है

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-04**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – सैद्धान्तिक ज्योतिर्विज्ञान

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को लग्नसाधन, दिक्साधन, छायाकर्ण साधन, नतकाल आनयन, छाया से कालज्ञान, पर्वसम्भव का ज्ञान, चन्द्रग्रहण तथा सूर्यग्रहण के सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी लग्नसाधन, अक्षयक्षेत्र, इष्टान्त्काइतिसाधन, नतकाल आनययन का ज्ञान, छाया से काल ज्ञान, छायर्क साधन तथा क्रान्ति से पलभानयन का ज्ञान, पर्वसम्भव ज्ञान, चन्द्रग्रहण एवं सूर्यग्रहण से सम्बन्धित ज्ञान आदि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **लग्न एवं दशमलग्न आनयन (अर्वाचीन पद्धति)**
लग्न एवं दशमलग्न आनयन (आर्ष पद्धति)

इकाई–2 **बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम् : महर्षि पाराशर**
(चलित चक्रसाधन, दशवर्ग साधन विंशोत्तरी महादशा, अन्तर्दशा एवं प्रत्यन्तर्दशा साधन)

इकाई–3 **सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय**
(पलभानयन, पञ्चज्यासाधन, लङ्कोदयसाधन, भुजान्तर तथा उदयान्तर)

इकाई–4 **सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (त्रिप्रश्नाधिकार लग्नसाधन, दिक्साधन तथा अक्षक्षेत्र)**

इकाई–5 **सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (त्रिप्रश्नाधिकार छायाकर्णसाधन, इष्टान्त्यकाहतिसाधन तथा नतकालानयन)**

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार– पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
2. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार मुरलीधर ठाकुर, चौखम्भा संस्कृत सिरीज, वाराणसी।
3. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल।
4. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार पं. सत्यदेव शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

5. सचित्र ज्योतिष शिक्षा (गणित खण्ड) प्रथम बी.एल. ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय)–भास्कराचार्य– हिन्दी टीकाकार– केदार दत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
7. ज्योतिषशास्त्र– डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, त्रिस्कन्ध ज्योतिष प्रकाशन, वाराणसी
8. गोल परिभाषा- डॉ. कामेश्वर उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन वाराणसी
9. बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्– श्री गणेशदत्त पाठक, सावित्री ठाकुर प्रकाशन, वाराणसी।
10. गोलपरिभाषा – पण्डित सीताराम झा, सीताराम झा, पण्डित सीताराम पुस्तकालय, चौगभा, बहेरा, दरभंगा।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-05**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – होरा ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को होरा/फलित का ज्ञान प्राप्त कराना तथा भचक की बारह राशियों के गुण, लक्षण से परिचय कराना, ग्रहों के गुण आकृति के विषय में जानकारी प्राप्त कराना, ग्रहों की योग कारक स्थिति से परिचय कराना व्यक्ति के जीवन में सूर्य और चन्द्रमा से बनने वाले राजयोग तथा पञ्चमहापुरूष राजयोग का ज्ञान तथा अरिष्ट के विषय में फलित का ज्ञान आदि विषयों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी होरा शब्द के अर्थ का बोध तथा राशियों का ज्ञान, ग्रहों के गुण, लक्षणादि के आधार पर जन्मकुण्डली का विश्लेषण करना, ग्रहों की योग कारक स्थितियों से परिचय कराना, अनफा, सुनफा, दुरुधरा, केमद्रुम और रूचक भद्रक, हंस, मालव्य एवं शश महापुरुष के लक्षण एवं फल का ज्ञान, जन्मकुण्डली के द्वारा जातक के जीवन में अरिष्ट का विश्लेषण करना आदि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 सारावली – होराशब्दार्थाध्याय तथा राशिभेदाध्याय

इकाई–2 सारावली – ग्रहगुणाध्याय

इकाई–3 सारावली – योगकारकाध्याय तथा कारकाध्याय

इकाई–4 सारावली – चन्द्रयोगाध्याय, सूर्ययोगाध्याय तथा पञ्चमहापुरुषयोगाध्याय

इकाई–5 सारावली – प्रव्रज्यायोगाध्याय

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. सारावली कल्याण वर्मा – हिन्दी व्याख्याकार– डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र, रजंन पब्लिकेशनम्, दिल्ली
2. सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार–डॉ. मुरलीधर चतुर्वेदी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।
3. Saravali (2 volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof P.s. Shastril
4. वृहज्जातक (भट्टोत्पलटीका सहित) वराहमिहिर टीकाकार श्री केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
5. वृहज्जातक हिन्दी टीकाकार पं. सीताराम झा, पण्डित सीताराम पुस्तकालय, चौगभा, बहेरा, दरभंगा
6. Brihat Jatakam-Varahinihir English Translation by Prof. P.S. Shastri
7. वृहज्जातक हिन्दी टीकाकार सुरेश चन्द्र मिश्र, रजंन पब्लिकेशनस्, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-06
प्रश्नपत्र का शीर्षक – वास्तु ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को गृह निर्माण से प्राप्त होने सुख, समृद्धि तथा शान्ति से परिचय कराना, गृहराम्भ की विधि, दिशा तथा दशा का ज्ञान, भूमि के अन्दर स्थिति शल्प को निकालकर भूमि को शुद्ध करना, गृहराम्भ के मुहूर्त का ज्ञान प्राप्त कराना, वृष वास्तुचक्र, मण्डलेश फल, द्वार निर्णय, द्वारवेध तथा द्वार स्थापन की प्रक्रिया से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी अनुरूप गृह निर्माण से पुरुषार्थ चतुष्टय की प्राप्ति, भूमिशोधन, शल्यानयन, दिक्साधन एवं पिण्डसाधन विधि–ज्ञान, आय का आनयन तथा गृहारम्भ के मुहूर्त हेतु मास–पक्ष–तिथि नक्षत्र आदि का ज्ञान, गृहायुष्यादि विचार एवं गृहाराम्भ योग का ज्ञान, वृष वास्तुचक्र, द्वार स्थापना तथा पञ्चग्रह प्रमाण का ज्ञान, वास्तु सम्बन्धी परामर्श हेतु कौशल वृद्धि आदि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 बृहद्वास्तुमाला (वास्तु पुरुष उत्पत्ति और स्वरूप, गृहनिर्माण हेतु, जिर्णोद्धारफल, गृहारम्भविधि, परगृहनिवासफल, गृहारंभविधि, भूमिशोधन तथा लक्षण)

इकाई–2 बृहद्वास्तुमाला (दिग्दिशाज्ञान, काकिणीविचार, वशिष्ठआदि आचार्योक्त भूमिलक्षण, प्रशस्तभूमि लक्षण, ग्रामवास विचार, शल्यज्ञान एवं शल्यानयन)

इकाई–3 बृहद्वास्तुमाला (आयानयन, आयाद्यनयन विचार तथा गृहारम्भ में मासपक्षतिथिनक्षत्रादि विचार)

इकाई–4 बृहद्वास्तुमाला (गृहाराम्भ मुहूर्त्त, गृहायुष्यादिविचार, गृहारम्भ योग, गृहनिर्माण में वृक्ष विचार)

इकाई–5 बृहद्वास्तुमाला (बृषवास्तुचक्र मण्डलेश फल, द्वारनिर्णय द्वारवेध, द्वारस्थापन तथा पञ्चगृहप्रमाण)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. बृहवास्तुमाला श्री रामनिहोर द्विवेदी, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
2. वास्तुराजवल्लभ–मण्डनसूत्रधार, हिन्दी टीकाकार श्री अनूप मिश्र, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी
3. Mayamatam-English Translation by Bruno Dagens
4. मुहूर्त चिन्तामणि (पीयूषधाराटीका) – हिन्दी टीकाकार पं. केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-02 (i)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संस्कृत

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण के नियमों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत साहित्य तथा व्याकरण के नियमों आदि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **नीतिशतकम् – आचार्य भर्तृहरि**
प्रारम्भ से 25 श्लोक (हिन्दी व्याख्या)

इकाई–2 **नीतिशतकम् – आचार्य भर्तृहरि**
श्लोक 26 से 50 (हिन्दी व्याख्या)

इकाई–3 **नीतिशतकम् – आचार्य भर्तृहरि**
श्लोक 51 से 75 (हिन्दी व्याख्या)

इकाई–4 **नीतिशतकम् – आचार्य भर्तृहरि**
श्लोक 76 से अन्त तक (हिन्दी व्याख्या)
ग्रन्थ एवं लेखक विषयक आलोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **शब्दरूप एवं धातुरूप**
शब्दरूप – नदी, धेनु, वारि, नामन्, गच्छत्, भगवत्, मधु, एक, द्वि, त्रि, चतुर्।
धातुरूप – रूद्र, स्वप्, हन्, इ, ब्रू, दुह्, भी, दा, धा, मुच्, भुज्,
(उपर्युक्त धातुओं के विधिलिङ्, लङ्, लुङ् एवं लोट्लकार में रूप)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. नीतिशतकम् (संस्कृत–हिन्दी व्याख्या) चौखम्भा प्रकाशन, वाराणसी।
2. शब्दधातुचन्द्रिका – चौखम्भा संस्कृत संस्थान, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-02 (ii)
प्रश्नपत्र का शीर्षक – वेदाङ्ग ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भारतीय वाङ्मय से परिचय कराना है, वेद दुनिया के प्राचीनतम् ज्ञान अभिलेख हैं। ज्योतिष वेद के अङ्ग क्षेत्र के रूप में स्वीकृत हैं। वेदाङ्ग में उल्लेलिखित काल की विभिन्न इकाईयों नक्षत्रों की संज्ञा तथा वर्गीकरण और गर्भाधान की शुभ तिथियों के ज्ञान प्राप्त से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी वेदाङ्ग ज्योतिष का परिचय युग, संवत्सर, अयन, ऋतु और मास का ज्ञान, वेदाङ्ग ज्योतिष में उल्लिखित, पर्व, विषुवत, अधिमास आदि का ज्ञान, नक्षत्रों के तारा के आधार पर मुहूर्त निर्धारण का ज्ञान आदि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **वेदाङ्ग ज्योतिष का सामान्य परिचय तथा रचनाकाल**

इकाई–2 **वेदाङ्ग ज्योतिष में युग, सवंत्सर, अयन,ऋतुमास**

इकाई–3 **वेदाङ्ग ज्योतिष में पक्ष, तिथि, पर्व, विषुवत, नक्षत्र, अधिमास**

इकाई–4 **आथर्वण ज्योतिष नक्षत्रों की संज्ञा तथा वर्गीकरण, नक्षत्र गणानुसार फल निरूपण तथा नक्षत्र–पीडन**

इकाई–5 **आथर्वण ज्योतिष गर्भाधान सम्बन्धी तिथियाँ तथा गर्भाधान विषयक कुछ अन्य विषय**

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. भारतीय ज्योतिष पं. शङ्कर बाल कृष्ण दीक्षित, हिन्दी समिति, राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन, हिन्दी भवन, लखनऊ।
2. संस्कृत वाङ्मय का वृहद इतिहास (द्वितीय वेदाङ्ग खण्ड) सम्पादक प्रो. ओम प्रकाश पाण्डेय, उत्तर प्रदेश संस्कृत संस्थान, लखनऊ।
3. वैदिक ज्योतिष डॉ. गिरिजा शंकर शास्त्री, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
4. वैदाङ्ग ज्योतिष आचार्य, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी
5. वैदाङ्ग ज्योतिष–डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र, रजंन पब्लिकेशनस्, दिल्ली
6. शिष्यीवृद्विदम् श्री लल्लाचार्य
7. आथर्वण ज्योतिषम् डॉ. प्रयाग नारायण मिश्र, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8. अथर्ववेदीपज्योतिषम् महर्षि अभय कात्यायन, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-02 (iii)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – प्रश्नज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को को प्रश्नज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी प्रश्नज्योतिष के विभिन्न विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 प्रश्नमार्ग – प्रथमाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 प्रश्नमार्ग – द्वितीयाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 प्रश्नमार्ग – तृतीयाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 प्रश्नमार्ग – चतुर्थाध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 प्रश्नमार्ग – पंचमध्याय
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. प्रश्नमार्ग – टीकाकार गुरुप्रसाद गौड़, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (द्वितीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **P-02**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – पञ्चांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण पद्धति

कुल अंक 40 (क्रेडिट 02)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को को पञ्चांग के अध्यापन के द्वारा संवत्सर, अयन, गोल, ऋतु, संक्रान्ति, तिथि, वार, नक्षत्र तथा करण; जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति के अध्यापन के द्वारा अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, विंशोत्तरी दशा साधन के मूलभूत सिद्धान्तों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी पञ्चांग तथा जन्मपत्रिका निर्माण के द्वारा अयन, गोल, ऋतु, मास, पक्ष, तिथि, वार, नक्षत्र आदि का ज्ञान, सूर्योदय, सूर्यास्त, दिनमान, रात्रिमान और मिश्रमान का ज्ञान, अयनांश, लग्नसाधन, भावसाधन, भयात–भभोग आदि का ज्ञान आदि के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **पञ्चांग में सम्वत्सर, अयन, गोल, ऋतु, संक्रान्ति, चान्द्रमास तथा पक्ष परिचय**

इकाई–2 **तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण परिचय**

इकाई–3 **जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (मानक समय से स्थानीय समय का ज्ञान, सूर्योदय,सूर्यास्त, दिनमान, रात्रिमान तथा मिश्रमान)**

इकाई–4 **जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (इष्टकाल, अयनांश, सायनसूर्य, लग्नसाधन तथा दशम लग्नसाधन)**

इकाई–5 **जन्मपत्रिका निर्माणपद्धति (भावसाधन, ग्रहस्पष्टीकरण, भयात, भभोग तथा विंशोत्तरी दशा साधन)**

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. मानसागरी टीकाकार– प्रो. रामचन्द्र पाण्डेय, चौखम्भा संस्कृत कृष्ण दास अकादेमी, वाराणसी
2. भारतीय कुण्डली विमर्श– डॉ. गिरिजा शङ्कर शास्त्री, देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली
3. भारतीय कुण्डली विज्ञान– हिम्मत लाल मीठालाल ओझा, भारतीय विद्या प्रकाशन, वाराणसी
4. ज्योतिष सर्वस्व डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र, रजंन पब्लिकेशनस् दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

पाठ्यक्रम

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर 2022-23

नवीन शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

ज्योतिर्विज्ञान

(संशोधित तथा परिवर्धित)

CBCS PATTERN

SCHOOL OF STUDIES IN SANSKRIT, JYOTIRVIGYAN & VED
VIKRAM UNIVERSITY, UJJAIN

SEMESTER-III (M.A. JYOTIRVIGYAN)
CBCS PATTERN

SUBJECT CODE	COURSE CODE	TITLE OF THE COURSE	COURSE CREDITS	NO. OF HRS PER WEEK	WEIGHTAGE FOR SEMESTER END EXAMINATION	WEIGHTAGE FOR INTERNAL EXAMINATION	TOTAL MARKS
	JCC-07	सिद्धान्त ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-08	फलित ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-09	संस्कृत	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-03	(i) पाराशर ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-03	(ii) संहिता ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-03	(iii) जैमिनि ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JGEC-01	(i) भाव ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JGEC-01	(ii) MOOCs (SWAYAM)	05	4 Hrs.	60	40	80
	EDC-03	Personality Development	04	4 Hrs.	32	48	80
	P-03	ब्रह्माण्ड तथा खगोल विज्ञान (Practical)	02	2 Hrs.	48	32	40
	JVV-03	Comprehensive Viva-Voce (Virtual)	04	2 Hrs.			80
		TOTAL	30				600

Note :

CORE COURSE (JCC).
ABILLITY ENHANCEMENT & SKILL DEVELOPMENT (AE & SD)
CORE ELECITVE COURSE (JEC)
COMPREHENSIVE VIVA - VICE (JVV)

नोट : 1. विषय समूह JCC-07, JCC-08, JCC-09 लेना अनिवार्य है।
2. विषय समूह JEC - 03 (i), JEC - 03 (II), JEC - 03 (iii) में से छात्र किसी एक विषय का चयन कर सकता है।
3. JGEC - 01 (I) (ii), विषय इस अध्ययनशाला से इतर अध्ययनशालाओं के विद्यार्थी ले सकेंगे।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-07**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – सैद्धान्तिक ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ग्रहों के उदय अस्त का ज्ञान प्राप्त कराना, चन्द्रमा की श्रृंगोन्नति का अध्ययन कराना, ग्रहयुति और भग्रहयुति के ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ग्रहों के उदयास्त एवं श्रृङ्गोन्नति का ज्ञान, ग्रहयुति एवं भग्रहयुति का ज्ञान, वैधृति एवं व्यतीपात योगों का ज्ञान– इन विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (ग्रहोदयास्ताधिकार)

इकाई–2 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (श्रृङ्गोन्नत्याधिकार)

इकाई–3 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (ग्रहयुत्याधिकार)

इकाई–4 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (भग्रहत्याधिकार)

इकाई–5 सिद्धान्त शिरोमणि गणिताध्याय (पाताधिकार)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) भास्कराचार्य, हिन्दी व्याख्याकार– पं. गिरिजाप्रसाद द्विवेदी, चौखम्भा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
2. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार मुरलीधर ठाकुर, चौखम्भा संस्कृत सिरीज, वाराणसी।
3. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार प्रो. बृजेश कुमार शुक्ल।
4. सिद्धान्तशिरोमणि–भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार पं. सत्यदेव शर्मा, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
5. सचित्र ज्योतिष (गणित खण्ड) प्रथम बी.एल. ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
6. सिद्धान्तशिरोमणि (गणिताध्याय) भास्कराचार्य–हिन्दी टीकाकार–केदार दत्त जोशी, मोतीलाल बनारसदास, दिल्ली
7. सरल त्रिकोणमिति बलदेव मिश्र
8. सरल त्रिकोणमिति बापूदेव शास्त्री सम्पादक पं. गोविन्द देव पाठक
9. चापीय त्रिकोणमिति बापूदेव शास्त्री
10. चापीय त्रिकोणमिति–नीलाम्बर झा

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-08**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – फलित ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को किसी जातक की आयु का निर्धारण करना, किसी जातक की कुण्डली में राजयोग की स्थिति तथा आजीविका के विषय का ज्ञान प्राप्त करना कराना है– आदि विषयों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी जातक की आयु का निर्धारण राजयोगादि विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 बृहज्जातक – अष्टकवर्गाध्याय

इकाई–2 बृहज्जातक – कर्मजीवाध्याय

इकाई–3 बृहज्जातक – राजयोगाध्याय तथा नाभसयोगाध्याय

इकाई–4 बृहज्जातक – भावफलाध्याय

इकाई–5 बृहज्जातक – नैर्याणिकाध्याय

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. बृहज्जातक (भट्टो त्पलटीका सहित)– वराहमिहिर–टीकाकार श्री केदारदत्त जोशी, मोतीलाल
2. बृहज्जातक हिन्दी टीकाकार पं. सीताराम झा
3. Brihat Jatakam-Varahmihir English Translation by Prof. P.S. Shastri
4. लघुजातक–पं. लखनलाल झा डॉ. कमलाकान्त पाण्डेय, चौखम्भा सुरभारती, वाराण)
5. सारावली कल्याण वर्मा–हिन्दी व्याख्याकार– डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र रंजन
6. Saravali (2 Volumes) Kalyana Verma with English Translation by Prof. P.S. Shastri
7. बृहज्जातक–हिन्दी टीकाकार–डॉ. सुरेश चन्द्र मिश्र रंजन पब्लिकेशन्स, दल्ली
8. सचित्र ज्योतिष शिक्षा द्वितीय खण्ड (गणित), बी.एल. ठाकुर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-09**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संस्कृत

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्कृत वाक्य रचना तथा काव्य बोध से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संस्कृत वाक्य रचना तथा काव्य बोध के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 वैराग्यशतकम् – भर्तृहरि
प्रारम्भ से 35 श्लोक (हिन्दी व्याख्या)

इकाई–2 वैराग्यशतकम् – भर्तृहरि
श्लोक 36–70 (हिन्दी व्याख्या)

इकाई–3 वैराग्यशतकम् – भर्तृहरि
श्लोक– 71 से अन्त तक (हिन्दी व्याख्या)
ग्रन्थ एवं लेखक विषयक आलोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी
अध्याय 11–15 तक

इकाई–5 शब्दरूप एवं धातुरूप
शब्द–दिश, क्षुध, गृह, वारि, गौ, गच्छत्, अहन्, सर्व, किम्, एतद्, इदम्
धातु– भी, शी, हु, युध्, जन्, मृ, स्पृश, भुज्, मुच्, तन् (लिट्, लुट्, लङ्, लृङ्)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. वैराग्यशतकम्– भर्तृहरि – चौखम्बा प्रकाशन, वाराणसी
2. प्रारम्भिकरचनानुवादकौमुदी – डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-03 (i)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – पाराशर ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को केन्द्र त्रिकोणादि भावों की संज्ञा से परिचय कराना और उसके फल का निर्धारण करना, भावेश के केन्द्र त्रिकोण के अन्तर सम्बन्धों से बनने वाले राजयोग, द्वितीयेश और सप्तमेश से होने वाले मारकेश के फलित का ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी भावेशों की संज्ञा के निर्धारण, भावेशों के फल निर्धारण एवं राजयोग का ज्ञान, मारकेश एवं दशाफल के अध्याय आदि की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **लघुपाराशरी संज्ञा अध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **लघुपाराशरी योगाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **लघुपाराशरी आयुर्दायध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **लघुपाराशरी दशाफलाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **लघुपाराशरी मिश्रफलायाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. लघुपाराशरी - डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशनस्, दिल्ली
2. लघुपाराशरी सिद्धान्त– मेजर एस.जी. खोत, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
3. लघुपाराशरी – डॉ. सर्वेश्वर शर्मा, रीना पब्लिकेशनस्, उज्जैन
4. लघुपाराशरी – पं. कामेश्वर उपाध्याय, चौखंबा प्रकाशन, वाराणसी
5. लघुपाराशरी मध्य पाराशरी – पं. केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JEC-03 (ii)
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संहिताज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संहिताज्योतिष के ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संहिताज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **लोमशसंहिता अध्याय 1–3**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **लोमशसंहिता अध्याय 4–6**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **लोमशसंहिता अध्याय 7–8**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **लोमशसंहिता अध्याय 9–10**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **लोमशसंहिता अध्याय 11–12**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. आचार्यलोमेशविरचित लोमशसंहिता – टीकाकार – गिरिजाशङ्करशास्त्री, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-03**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – जैमिनि ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को जैमिनि सूत्र में उल्लिखित संज्ञाओं से परिचय कराना, कारकांश पदउपपद का फलादेश करना, आयु का विचार करना और इसके अपवादों से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी जैमिनिसूत्र में उल्लिखित ज्योतिषीय संज्ञाओं, जैमिनी सूत्र के अनुसार कारकांश पद–उपपद के फलादेश, जैमिनिसूत्र के अनुसार जातक की आयु का ज्ञान आदि की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **जैमिनिसूत्रम्–संज्ञा प्रकरण**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **जैमिनिसूत्रम् कारकांश फलादेश**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **जैमिनिसूत्रम् पद उपपद फलादेश**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **जैमिनिसूत्रम् आयु विचार**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **जैमिनिसूत्रम् आयुर्दाय अपवाद विचार**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. जैमिनिसूत्रम् श्री अच्युतानन्द झा, चौखंबा संस्कृत सीरिज, वाराणसी
2. जैमिनिसूत्रम् श्री सीताराम शर्मा, चौखंबा विद्या भवन, वाराणसी
3. जैमिनिसूत्रम् डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रजंन पब्लिकेशनस्, दिल्ली
4. जैमिनिसूत्रम् आचार्य श्री कमलाकांत शर्मा
5. जैमिनि ज्योतिष का अध्ययन डॉ. बी.वी. रमन, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JGEC-01 (i)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – भावज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को भावज्योतिष ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी भावज्योतिष के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 भावार्थरत्नाकर – अध्याय 11
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 भावार्थरत्नाकर – अध्याय 12
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 भावार्थरत्नाकर – अध्याय 13
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 भावार्थरत्नाकर – अध्याय 14
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 भावार्थरत्नाकर – अध्याय 15
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. रामानुजाचार्यविरचित भावार्थरत्नाकर, रंजन पब्लिकेशन , नई दिल्ली।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (तृतीय सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – P-03
प्रश्नपत्र का शीर्षक – ब्रह्माण्ड तथा खगोल विज्ञान

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ब्रह्माण्ड से परिचय कराना उसकी उत्पत्ति एवं रचना से सम्बन्धित विभिन्न मतों से परिचय कराना है। ग्रह–उपग्रह, धूम–केतु, उल्का और आकाशगंगा के विषय में जानकारी देना, सूर्य–चन्द्र–मंगल बुध–गुरु–शुक्र–शनि के आकार, ताप, रंग दूरी आदि का ज्ञान प्राप्त कराना। भचक एवं उसमें स्थित नक्षत्रों, राशियों के आकार के ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ब्रह्माण्ड से परिचय, सौरमण्डल की उत्पत्ति एवं ब्रह्माण्ड की रचना का ज्ञान, ग्रह सूर्य–चन्द्र–मंगल बुध गुरु–शुक्र–शनि आदि के आकार, ताप, रंग एवं दूरी का ज्ञान, आकाश दर्शन एवं भचक में स्थित सताईस नक्षत्रों के आकार का ज्ञान आदि के मूलभूत सिद्धान्तों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 ब्रह्माण्ड एक परिचय, ब्रह्माण्ड रचना और विभिन्न मत तथा सौरमण्डल कीउत्पत्ति की परिकल्पना के सिद्धान्त।

इकाई–2 सौरमण्डल के विभिन्न सदस्यों का संक्षिप्त परिचय ग्रह, उपग्रह, धूमकेतु, उल्का तथा आकाशगंगा

इकाई–3 सौरमण्डल का अध्ययनः सूर्य–आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में चन्द्रमा आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में बुध–आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में शुक्र आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में मंगल आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में गुरु आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में तथा शनि आकार, ताप, रंग, दूरी आदि के सन्दर्भ में

इकाई–4 आकाश दर्शन–आकाश में विभिन्न राशियों की उदय स्थिति और उनकी पहचान, राशियों के उदय होने के माह का ज्ञान, पूर्वी क्षितिज पर लग्नोदय का ज्ञान; किस माह में किस समय कौन सी राशि उदित होती है।

इकाई–5 भचक्र का परिचय, 27 नक्षत्रों के भारतीय व ग्रीक अंग्रेजी नाम, नक्षत्रों का राशियों से सम्बन्ध नक्षत्रों के तारों की संख्या व आकार ।

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. बृहत्संहिता – आचार्य वराहमिहिर
2. आकाश दर्शन – गुणाकार मुले, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. ज्योतिषीय गणित एवं खगोलशास्त्र – विमल प्रसाद जैन, अल्फा पब्लिकेशनस्, नोयडा
4. खगोल एवं गणित ज्योतिष – दीपक कपूर, जैन बुक अजेन्सी, कानाट पेलेस, दिल्ली
5. भुवनकोशतत्त्वमीमांसा – डॉ. अनिलकुमार पोरवाल

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (म.प्र.)

पाठ्यक्रम

एम.ए. चतुर्थ सेमेस्टर 2022-23

नवीन शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप

ज्योतिर्विज्ञान

(संशोधित तथा परिवर्धित)

CBCS PATTERN

SCHOOL OF STUDIES IN SANSKRIT, JYOTIRVIGYAN & VED
VIKRAM UNIVERSITY, UJJAIN

SEMESTER-IV (M.A. JYOTIRVIGYAN)
CBCS PATTERN

SUBJECT CODE	COURSE CODE	TITLE OF THE COURSE	COURSE CREDITS	NO. OF HRS PER WEEK	WEIGHTAGE FOR SEMESTER END EXAMINATION	WEIGHTAGE FOR INTERNAL EXAMINATION	TOTAL MARKS
	JCC-10	गोल–ज्योतिर्गणित	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-11	फलित ज्योतिष के इतर आयाम	05	5 Hrs.	60	40	100
	JCC-12	मुहूर्तशास्त्र	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-04	(i) संहिता ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-04	(ii) तन्त्र और ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JEC-04	(iii) ताजिक ज्योतिष	05	5 Hrs.	60	40	100
	JGEC-02	(I) प्रश्न ज्योतिष	04	4 Hrs.	32	48	80
	JGEC-02	(ii) MOOCs (SWAYAM)	04	4 Hrs.	32	48	80
	EDC-04	Tourism Management	04	2 Hrs.	48	32	80
	P-04	कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति (Practical)	02	2 Hrs.			40
	JVV-04	Comprehensive Viva-Voce (Virtual)	04				80
		TOTAL	30				600

Note :

CORE COURSE (JCC).
ABILLITY ENHANCEMENT & SKILL DEVELOPMENT (AE & SD)
CORE ELECITVE COURSE (JEC)
COMPREHENSIVE VIVA - VICE (JVV)

नोट : 1. विषय समूह JCC-10, JCC-11, JCC-12 लेना अनिवार्य है।
2. विषय समूह JEC - 04 (I), JEC - 04 (ii), JEC - 04 (iii) में से छात्र किसी एक विषय का चयन कर सकता है।
3. JGEC - 02 (i) (ii), विषय इस अध्ययनशाला से इतर अध्ययनशालाओं के विद्यार्थी ले सकेंगे।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-10
प्रश्नपत्र का शीर्षक – गोल–ज्योतिर्गणित

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को पृथ्वी के भौगोलिक स्वरूप, ब्रह्माण्ड में ग्रहों की गति का अध्ययन तथा ग्रहों की चाल समझने के लिए गोल यन्त्र बनाने की विधि से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी पृथ्वी आदि चतुर्दश भुवनों का ज्ञान, मध्यम गति और गोलबन्ध का ज्ञान, ग्रहण के स्पर्श, मध्य और मोक्ष के समय निर्धारण का ज्ञान– इन विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 सिद्धान्त शिरोमणि – गोलाध्याय (भुवनकोश)

इकाई–2 सिद्धान्त शिरोमणि – गोलाध्याय (मध्यगतिवासना)

इकाई–3 सिद्धान्त शिरोमणि – गोलाध्याय (गोलबन्धाधिकार)

इकाई–4 सिद्धान्त शिरोमणि – गोलाध्याय (त्रिप्रश्नवासना)

इकाई–5 सिद्धान्त शिरोमणि – गोलाध्याय (ग्रहणवासना)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. सिद्धान्तशिरोमणि (गोलाध्याय) भास्कराचार्य सम्पादक मुरलीधर चतुर्वेदी, चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
2. गोलाध्याय भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार– पं. केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
3. सिद्धान्तशिरोमणि (गोलाध्याय)– भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार पं. सत्यदेव शर्मा, चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।
4. गोलाध्याय भास्कराचार्य, हिन्दी टीकाकार– पं. गिरिजा प्रसाद द्विवेदी चौखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान, वाराणसी।
5. ग्रहगति का क्रमिक विकास श्री चन्द्र पाण्डेय, कृष्ण दास अकादेमी, वाराणसी।

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JCC-11**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – फलित ज्योतिष के इतर आयाम

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को अंक ज्योतिष से परिचित कराना मूलांक एवं भाग्यांक का निर्धारण करना नामाक्षर प्रयोग विधि एवं अंकों के आधार पर रंग एवं रत्नों का निर्धारण करना। प्रश्न ज्योतिष के अनुसार फलादेश करना और हस्त रेखाओं के आधार पर व्यक्ति का फलादेश करने की व्यावहारिक शिक्षा देना है। हस्त रेखा के आधार पर व्यक्ति का भविष्य कथन और घटनाओं का काल निर्धारण करने की व्यावहारिक शिक्षा देना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी को हाथ और उँगलियों के आकार के आधार पर उनके स्वाभाव का ज्ञान, हस्त रेखाओं और उनके चिन्हों की भाषा को समझने का ज्ञान, अङ्कशास्त्र के द्वारा अङ्कशास्त्र का ज्ञान, मूलांक एवं भाग्यांक निर्धारण तथा प्रयोग का ज्ञान, अंकों के आधार पर रंगों एवं रत्नों का ज्ञान, मन्त्रोपचार तथा मणि (रत्न) उपचार का ज्ञान, यन्त्रोपचार विधि एवं औषधियों के विषय में समुचित ज्ञान करके इससे सम्बन्धित परामर्शदायी कार्यों को किया जा सकता है।

इकाई–1 **प्रश्न ज्योतिष (षट्पंचाशिका)** – अध्याय 1,2,3,4

इकाई–2 **प्रश्न ज्योतिष (षट्पंचाशिका)** – अध्याय 5,6,7

इकाई–3 **अंक ज्योतिष–** अंक 1 से 5 तक
अंक ज्योतिष का परिचय, मूलांक, नामांक निर्धारण विधि,
अंकों के अनुसार व्यक्ति के स्वभाव, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, व्यवसाय, आर्थि स्थिति,
विवाह, जीवन के अनुकूल प्रतिकूल वर्ष और सफलता के विविध ज्योतिष शास्त्रीय उपाय।

इकाई–4 **अंक ज्योतिष–** अंक 6 से 9 तक
अंकों के अनुसार व्यक्ति के स्वभाव, शिक्षा, परिवार, स्वास्थ्य, व्यवसाय, आर्थि स्थिति,
विवाह, जीवन के अनुकूल प्रतिकूल वर्ष और सफलता के विविध ज्योतिष शास्त्रीय उपाय।

इकाई–5 **हस्त रेखा शास्त्र –** 1. प्रमुख एवं गौण रेखाओं का सचित्र फलादेश
2. हस्तरेखाओं द्वारा विभिन्न योगों का ज्ञान तथा काल निर्धारण

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ–

1. षट्पंचाशिका– डॉ. उमेश पुरी, रंजन पब्लिकेशन, दिल्ली
2. षट्पंचाशिका– डॉ. सर्वेश्वर शर्मा, रीना पब्लिकेशन, उज्जैन
3. रेखा रहस्य–गोपाल देव गौड़, चौखंबा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी
4. सम्पूर्ण हस्तरेखा विज्ञान–कीरो, मनोज पब्लिकेशनस्, दिल्ली
5. सचित्र सामुद्रिक रहस्य– शिवदत्त मिश्र, ज्योतिष प्रकाशन, चौक, वाराणसी
6. सामुद्रिक शास्त्र डॉ. शुकदेव चतुर्वेदीवरण, प्राच्य प्रकाशन, वाराणसी
7. हस्त रेखा विज्ञान–गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
8. अङ्क ज्योतिष बादरायण, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
9. अङ्क विद्या पं. गोपेश कुमार ओझा, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
10. अंकों में छिपा भविष्य –कीरो रजंन पब्लिकेशंस, दिल्ली
11. अंक विद्या रहस्य–सेफेरियल रजंन पब्लिकेशंस, दिल्ली
12. अंक ज्योतिष विज्ञान एवं भविष्यफल–अरुण सागर ''आनंद, व्ही.एस. पब्लिकेशंस, दिल्ली

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – JCC-12
प्रश्नपत्र का शीर्षक – मुहूर्तशास्त्र

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को मुहूर्तशास्त्र से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी मुहूर्तशास्त्र के विभिन्न विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य**
अध्याय 1 – शुभाशुभप्रकरणम्

इकाई–2 **मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य**
अध्याय 2 – नक्षत्रप्रकरणम्

इकाई–3 **मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य**
अध्याय 4 – गोचरप्रकरणम्

इकाई–4 **मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य**
अध्याय 5 – संस्कारप्रकरणम्

इकाई–5 **मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य**
अध्याय 6 – विवाहप्रकरणम्

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य, टीकाकार :– केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, प्रकाशन, दिल्ली
2. मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य, टीकाकार :– डॉ. सुरेशचन्द्र मिश्र, रंजन पब्लिकेशन्स, दिल्ली
3. मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य, टीकाकार :– गौरीनाथ पाठ, ठाकुर प्रसाद कैलाशनाथ बुक सेलर, वाराणसी
4. मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य, टीकाकार :–पं. कौशल किशोर त्रिपाठी, श्री दुर्गा पुस्त भण्डार प्रा.लि. इलाहबाद
5. मुहूर्तचिन्तामणि – श्रीरामाचार्य, टीकाकार :–डॉ. रामचन्द्र पाण्डेय कृष्णदास अकादमी, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-04 (i)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – संहिता ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संहिता ज्योतिष से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी संहिता ज्योतिष के विविध विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **बृहत्संहिता अध्याय 34–37**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **बृहत्संहिता अध्याय 38–41**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **बृहत्संहिता अध्याय 42–45**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **बृहत्संहिता अध्याय 46–49**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **बृहत्संहिता अध्याय 50–52**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. बृहत्संहिता – वराहमिहिर, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-04 (ii)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – तन्त्र और ज्योतिष

कुल अंक 60

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्योतिष और तन्त्र के मूलभूत सिद्धान्तों और उनके अन्तर्निहित संबंध से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी प्राचिन विधा आगम शास्त्र (तन्त्र) के विभिन्न विषयों से परिचित होकर उनका ज्योतिषीय क्षेत्र में जनकल्याण हेतु उपयोग कर सकेंगे।

इकाई–1 तन्त्र का आविर्भाव और विकास, तन्त्र में वैश्विक सिद्धान्त, मन्त्र एवं मातृकाओं का स्वरूप
दीक्षा और अभिषेक, तन्त्र–मन्त्र–यन्त्र और आधुनिकविज्ञान
जैन और बौद्ध मत तथा तान्त्रिक साधना का उद्देश्य

इकाई–2 नकुलीश–पाशुपतदर्शन

इकाई–3 शैवदर्शन

इकाई–4 षट्कर्म; कालनिर्णय; तिथिनिर्णय; वारनिर्णय; माहेन्द्रादिनिर्णय; नक्षत्रनिर्णय

इकाई–5 यन्त्र– नवग्रहयन्त्र; सर्वार्थसिद्धिदायकयन्त्र; सर्वरोगहरयन्त्र;
मानसिकरोगनिवारणयन्त्र; अर्शशमनयन्त्र; मूढतानिवारणयन्त्र; आकर्षणयन्त्र
गर्भस्तम्भनपत्र; विविध कामनासाधकयन्त्र विधान

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. कामरत्नम् – नित्यनाथ – लक्ष्मीवेंकटेश्वर प्रेस, मुम्बई
2. मन्त्र और मातृकाओं का रहस्य – शिवशङ्कर अवस्थी, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी
3. तन्त्र सिद्धान्त और साधना–देवदत्त शास्त्री, स्मृतिप्रकाशन, इलाहाबाद
4. सर्वदर्शनसंग्रह – व्या. डॉ. उमाशङ्कर शर्मा ऋषि, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JEC-04 (iii)**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – ताजिक ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ताजिक नीलकण्ठी में प्रयुक्त हुये संज्ञातन्त्र, ग्रह्यध्याय, सोलह योगों से परिचय कराना, सहम का ज्ञान कराना, वर्षकुण्डली एवं मुन्थहा के ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ताजिक के अनुसार ग्रहों का परिचय और सोलह योगों का ज्ञान, विभिन्न प्रकार के स हम का ज्ञान, वर्षेश एवं मुन्थहा के आधार पर फलित का ज्ञान– इन विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (ग्रहाध्याय)

इकाई–2 ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (षोड़शयोगाध्याय)

इकाई–3 ताजिकनीलकण्ठी, संज्ञातन्त्र (सहमाध्याय)

इकाई–4 ताजिकनीलकण्ठी, वर्षतन्त्र (वर्षेशफलाध्याय)

इकाई–5 ताजिकनीलकण्ठी, वर्षतन्त्र (मुन्थहा फलाध्याय)

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. ताजिकनीलकण्ठी–नीलकण्ठाचार्य– हिन्दी टीकाकार पं. केदारदत्त पं. केदारदत्त जोशी, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली
2. ताजिकनीलकण्ठी–नीलकण्ठाचार्य– हिन्दी अनुवादक श्रीवासुदेव गुप्त
3. ज्योतिष पीयूष – डॉ. कल्याणदत्त शर्मा, वेदमाता गायत्री, शान्ति कुञ्ज हरिद्वार
4. ताजिक भूषणम् गणेश दैवज्ञ–हिन्दी अनुवाद पं. सीताराम शास्त्री, खेमराज श्री कृष्णदास प्रकाशन, मुम्बई
5. ताजिकनीलकण्ठी– रामचन्द्र पाठक, चौखम्भा संस्कृत भवन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **JGEC-02**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – प्रश्न ज्योतिष

कुल अंक 60 (क्रेडिट 05)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को ज्योतिषीय प्रश्न शास्त्र के ज्ञान से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी ज्योतिषीय प्रश्न शास्त्र के विविध विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 **प्रश्नमार्ग – सप्तदशाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–2 **प्रश्नमार्ग – अष्टादशाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–3 **प्रश्नमार्ग – एकोनविंशाध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–4 **प्रश्नमार्ग – विंशोऽध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

इकाई–5 **प्रश्नमार्ग – एकविंशोऽध्याय**
व्याख्या एवं समालोचनात्मक प्रश्न

सैद्धान्तिक मूल्याङ्कन – 60 + आन्तरिक मूल्याङ्कन– 40 = कुल अङ्क = 100

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. प्रश्नमार्ग – टीकाकार गुरुप्रसाद गौड़, चौखम्भा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी

विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन
पाठ्यक्रम एम.ए. (चतुर्थ सेमेस्टर) ज्योतिर्विज्ञान
CBCS PATTERN
सत्र– 2022–23 प्रश्नपत्र – **P-04**
प्रश्नपत्र का शीर्षक – कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति

कुल अंक 60 (क्रेडिट 02)

Course objectives :

इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति के द्वारा प्राचीन वैदिक ज्योतिष को आधुनिक तरीके से प्रस्तुत करना, जन्मपत्रिका के भाव एवं ग्रहों के अंश का निर्धारण नक्षत्र स्वामी उपस्वामी और उप–उपस्वामी के आधार पर फलित विश्लेषण से परिचित कराना है।

Course outcomes :

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति के द्वारा ज्योतिष की आधुनिकतम विद्या का ज्ञान, जन्मपत्रिका निर्माण कारकेश का निर्धारण एवं उपस्वामी का ज्ञान, प्रश्न ज्योतिष का परम्परागत एवं आधुनिक ज्ञान के विविध विषयों की व्याख्या कर सकेंगे।

इकाई–1 कृष्णमूर्ति ज्योतिष का सामान्य परिचय

इकाई–2 कृष्णमूर्ति के अनुसार जन्मपत्रिका निर्माण

इकाई–3 नक्षत्र राशि विभाजन, स्वामी, उपस्वामी तथा उप–उप स्वामी का सिद्धान्त

इकाई–4 कृष्णमूर्ति के अनुसार कारकांश विश्लेषण

इकाई–5 कृष्णमूर्ति पद्धति में प्रश्न ज्योतिष

अनुशंसित–ग्रन्थ –

1. Reader - Casting the Horoscope by Prof K.S. Krishnamurti
2. Reader II- Fundamental Principles of Astrology by Prof K.S. Krishnamurti
3. Reader III- Predictive Stellar astrology by Prof K.S. Krishnamurti
4. Reader IV- Marriage, Married Life & Children by Prof K.S. Krishnamurti
5. Reader V- Transits by Prof K.S. Krishnamurti
6. Reader VI- Horary Astrology by Prof K.S. Krishnamurti
7. कृष्णमूर्ति ज्योतिष पद्धति पर आधारित फलित ज्योतिष रहस्य यशवंत देसाई, डी.पी.बी. पब्लिकेशनस्, दिल्ली
8. कृष्णमूर्ति ज्योतिष रहस्य सुरेश शहासने, श्री गणेश प्रकाशन, मुम्बई
9. कृष्णमूर्ति पद्धति – के.एस. कृष्णमूर्ति, कृष्णमूर्ति पब्लिकेशनस्, दिल्ली